INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 7.560 (SJIF 2024)

अब्राहम मास्लो का आवश्यकता, पदानुक्रम सिद्धांत एवं पंचकोशीय अवधारणा

(Abraham Maslow's Hierarchy of Needs Theory and Pancha Kosha Concepts)

डॉ अरुण कुमार मिश्र

विभागाध्यक्ष,
शिक्षा एवं पुस्तकालय विज्ञान संकाय
एपेक्स प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी,
पासीघाट (अरुणाचल प्रदेश, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/09.2024-38431956/IRJHIS2409009

सार :

मूलतः अब्राहम मास्लो का आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत, तैत्तिरीय उपनिषद् में वर्णित पंचकोशीय अवधारणा का परिवर्तित रूप है। दोनों के विषय वस्तु में कोई विशेष अंतर नहीं है, केवल शब्दों में हेर-फेर कर इसे एक नया कलेवर प्रदान कर दिया गया है। मास्लो महोदय आवश्यकता को घटते क्रम में वर्णित किया है, और उसके पांच स्तर बताए हैं। इसी प्रकार पंचकोशीय अवधारणा में भी पांच स्तर वर्णित हैं। व्यक्ति अपनी आवश्यकता की पूर्ति के साथ-साथ स्तर में भी परिवर्तन करते हुए वह उत्तरोत्तर अगले चरण में अग्रसर होता रहता है। वस्तुतः यही अवधारणा पंचकोशीय में भी है। मूलभूत अंतर यह है, मास्लो महोदय इसे मनुष्य के अभिप्रेरणा के अंतर्गत लेते हैं, जबकि पंचकोशीय अवधारणा में इसे व्यक्तित्व विकास के अंतर्गत लिया जाता है।

***मुख्य शब्द** : आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत, अभिप्रेरणा, पंचकोशीय अवधारणा, व्यक्तित्व विकास का उपनिषदीय मॉडल।*

प्रस्तावना :

प्रस्तुत लेख का विषय वस्तु यह है ,कि किस प्रकार एक भारतीय अवधारणा के स्वरूप का परिवर्तन करके उसे नए कलेवर और नए नाम से हमारे सामने प्रस्तुत किया गया है, और हम सब उसी को पढ़ रहे हैं, और कई विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का यह विषय वस्तु है, जबकि भारतीय अवधारणा वह स्थान नहीं प्राप्त कर सकी, जिसकी वह हकदार थी। अर्थात भारतीय पंचकोशीय अवधारणा से भारतीयों को वंचित करके रखा गया। अतः हम कह सकते हैं, कि भारतीय छात्र भारतीय ज्ञान व परंपरा के बोध से वंचित हैं। अतः हम सभी का यह प्रयास होना चाहिए, कि भारतीय छात्र भारतीय ज्ञान व परंपरा के बोध को समझें, और बोधत्व भी प्राप्त करें।

नई शिक्षा नीति 2020 में भारतीयता पर जोर देने की बात कही जा रही है, और भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे लाने का प्रयास किया जा रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में यह शोध अपनी उपादेयता को सिद्ध करता है। इससे भारतीय छात्र अपने प्राचीन ज्ञान के खोज की ओर अग्रसरित होंगे, जिससे भारत अपना खोया हुआ प्राचीन गौरव और वैभव प्राप्त कर सकेगा। जिससे नई शिक्षा नीति

की उपादेयता भी सिद्ध हो सकेगी।

उद्देश्य :

1. आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत की मौलिकता को समझना।
2. आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत के चरणबद्धता को समझना।
3. पंचकोशीय अवधारणा की मौलिकता को समझना।
4. पंचकोशीय अवधारणा के चरणबद्धता को समझना।
5. दोनों सिद्धांतों के मौलिकता और एकरुपता को समझना।

परिकल्पना :

1. आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत में मौलिकता है।
2. पंचकोशीय सिद्धांत में मौलिकता है।
3. दोनों सिद्धांतों में मूलभूत अंतर है।

शोध की सीमाएं :

प्रस्तुत शोध केवल मास्लो के आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत और पंचकोशीय अवधारणा दोनों के मौलिकता और उसमें अंतर्निहित एकता पर केंद्रित है।

शोध विधि :

इस विधि के अंतर्गत हम पर्यवेक्षण विधि का उपयोग करेंगे, क्योंकि शोध का विषय वस्तु दो सिद्धांत है, जिनके मूलभूत बिंदु ओंको अग्रसारित कर उसमें एका और अंतर में खोज करने का प्रयास करेंगे। इस प्रकार हम उसकी अर्थात दोनों सिद्धांतों के मौलिकता, एकता और अंतर की जांच करने में समर्थ हो सकेंगे |

शोध कार्य का विवेचन- मास्लो का आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत :

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, कि इन्होंने आवश्यकता को ही क्रम के रूप में रखा है। इन्होंने मनुष्य की आवश्यकताओं को एक क्रम प्रदान किया है, जिसमें मनुष्य कुछ आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात दूसरी आवश्यकता के विषय में सोचता है, या आगे बढ़ता है | लेकिन इन्होंने यह भी स्पष्ट किया है की आवश्यकतायें हर अगले स्तर पर कम या सीमित होती जाती हैं | इसी तरह वह इंद्रियानुभूत आवश्यकता से इंद्रियातीत आवश्यकता की और क्रमवार बढ़ता है। जैसे-जैसे मानव के एक आवश्यकता की पूर्ति होती जाती है, वैसे-वैसे वह दूसरी तरफ अग्रसर होता है। इसे उन्होंने पांच क्रम दिए हैं, जो इस प्रकार है।

नोट :

मुख्य बात यह है कि इन्होंने स्वयं स्वीकार किया है, कि उच्चतर आवश्यकता की पूर्ति हेतु निम्नतर आवश्यकता की पूर्ति कि, पहले आवश्यकता होती है।

i. **शारीरिक आवश्यकता:** मनुष्य जन्म के पश्चात सर्वप्रथम इसी आवश्यकता की पूर्ति का प्रयास करता है। इसमें मनुष्य

मूलतः भोजन, पानी , कपड़े, आश्रय , गर्मी, नींद, सहवास और मल त्याग आदि आवश्यकता की पूर्ति का प्रयास करता है। जब इन मूलभूतआवश्यकताओं की पूर्तिहो जाती है, तो वह दूसरेचरण की ओर अग्रसर होता है।

ii. **सुरक्षा की भावना:** शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति के पश्चात मानव जीवन में उसकी सुरक्षा की भावना जागृत होती है। क्योंकि मानव जीवन का स्वाभाविक लक्षण है, वस्तुओं का संग्रह। जब वह शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, तो साथ-साथ वस्तुओं के संग्रह के कारण उसे उसकी सुरक्षा की चिंता भी सताने लगती है, जो समस्त चीजों, जिनको अपने साथ रखना चाहता है, उनका संग्रह प्रारंभ कर देता है:-जैसे- स्वयं की, परिवार की, नौकरी की, धन की, नैतिकता की,स्वास्थ्य की, संपत्ति की आदि। वह सदैव अपेक्षा करता है, उसके प्रिय वस्तु की सुरक्षा सुनिश्चित हो।

iii. **प्रेम व अपनेपन की आवश्यकता:** जब उसकी सुरक्षा की आवश्यकता की पूर्तिहो जाती है, तो व्यक्ति में प्रेम व स्नेह की भावना जागृत होती है। वह स्वयं प्रेम व स्नेह से अभिभूत होने के कारण दूसरोंसे भी यही अपेक्षा करता है। वह चाहता है, कि सभी उसके साथ प्रेम व स्नेह करें। अर्थात, अपने मन की इच्छा व कामना की पूर्ति के लिए, वह भी लालायित रहता है।

iv. **सम्मान की आवश्यकता:** जब वह प्रेम व अपनेपन को प्राप्त कर लेता है, तो वह दूसरोंसे सम्मान की अपेक्षा करता है। वह समाज में पद और प्रतिष्ठा की चाह रखता है, क्योंकि इससे उसकी गरिमा बढ़ती है, और हर मानव की यह चाह होती है।

v. **आत्म सिद्धि की अवस्था:** यह मानव अभिप्रेरणा की चरम अवस्था है। जिसमें वह चरम सुख का अनुभव करता है, क्योंकि इस अभिप्रेरणा की प्राप्ति के पश्चात और कोई अभिप्रेरणा नहीं रह जाती हैं। इसीलिए इसे आत्म सिद्धि भी कहा जाता है।

पंचकोशीय अवधारणा :

यह व्यक्तित्व विकास का भारतीय मॉडल है। यह भारतीय अवधारणा स्थूल से सूक्ष्म की यात्रा है, जिसमें मानव भौतिक जगत से आध्यात्मिक जगत की यात्रा करता है। इस यात्रा के भी पांच पड़ाव हैं।

i. **अन्नमयकोश:** यह दृश्य भौतिक जगत या जड़ जगत जिसमें मानव समस्त सुखों की प्राप्ति कर सकता है, उसका उपयोग कर सकता है, यह अन्नमय कोश है।

ii. **प्राणमय कोश:** सूक्ष्म की यात्रा में व्यक्ति अपने जड़ जगत से सूक्ष्म प्राण (जिसमें जड़ व चेतन मिलकर जीव का निर्माण करते हैं।) अर्थात, चेतना या आत्मा या वैज्ञानिक रूप में ऊर्जा प्राप्त करता है। जिसकी सहायता से वह चैतन्य हो जाता है। और स्वयं जीव बनने के कारण उसमें भी सुरक्षा प्राप्त करने की चाह उत्पन्न हो जाती है।

iii. **मनोमय कोश:** सूक्ष्मतर की यात्रा में आत्मा से सूक्ष्म मन है। जब जड़, जीव बनकर चैतन्य हो जाता है, तो चंचलता का गुण प्राप्त करता है। यही मनोमय कोश है। जहां पर व्यक्ति का मानसिक विकास संभव होता है। और यहां पर मानव अपने मानसिक एषणाओं कि पूर्ति करने का प्रयास करता है। अर्थात मन का सूक्ष्म विश्लेषण करने का प्रयास करता है |

iv. **विज्ञानमय कोश:** मनोमय कोश से सूक्ष्म और उच्चतर कोश है, विज्ञान मय कोश । इस कोश में व्यक्तित्व को औपचारिकता मिलती है, और इस औपचारिकता द्वारा वह ज्ञान से आलोकित होता है। जिससे उसमें विवेक शक्ति जागृत होती है, और इस विवेक शक्ति के माध्यम से वह श्रेयस एवं प्रेयस में अपने व्यक्तित्व के अनुसार चुनाव करता है। जिससे वह अपनी इच्छाओं के अनुरूप निर्णय लेने में समर्थ होता है। चूंकि पाश्चात्य जगत में ज्ञान की प्राप्ति भौतिक सुख के लिए होती है, तो वह यहां से अधोगामी यात्रा पर निकल पड़ता है। जबकि भारतीय व्यक्तित्व, विवेक शक्ति का प्रयोग कर प्रेयस के स्थान पर श्रेयस का चुनाव कर उर्ध्वगामी आनंद की खोज में निकल पड़ता है।

v. **आनंदमय कोश:** भौतिक सुख की प्राप्ति पर मनुष्य की इच्छा अनंत रूप में बलवती होती जाती हैं, जबकि आनंद की प्राप्ति में सभी इच्छाएं तिरोहित हो जाती हैं। व्यक्ति अंश से पूर्ण की ओर यात्रा कर पूर्णाकार हो जाता है। अर्थात, व्यक्तित्व के विकास की यात्रा जड़-चेतन- मन- ज्ञान से होकर पूर्ण पर परिपूर्ण हो जाती है। जहां समस्त कामनाएँ तिरोहित हो जाती है।

तुलनात्मक अध्ययन –

स्तर	मास्लो का आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत	पंचकोशीय अवधारणा
प्रथम	शारीरिक आवश्यकता-व्यक्तिगत सुख की प्राप्ति जैसे भोजन, पानी, नींद, सहवास आदि।	भौतिक सुख की प्राप्ति, जिसमें समस्त दृश्य जगत की वस्तुओं के माध्यम से सुख की प्राप्ति जैस- भोजन, पानी, और समस्त प्रेयस वस्तुएं।
द्वितीय	शारीरिक आवश्यकता के पश्चात प्राप्य वस्तुओं के सुरक्षा की अवधारणा। समस्त प्राप्य वस्तुओं की सुरक्षा की इच्छा।	इसमें जड़ के साथ-साथ चेतन का भी भान। क्योंकि वह चेतन है, आत्मा या पदार्थ जन्य ऊर्जा है। और हर चेतन अपनी सुरक्षा की चिंता भी स्वयं करता है।
तृतीय	प्रेम व अपनेपन की आवश्यकता की पूर्ति में व्यक्ति अपने मन की इच्छाओं की पूर्ति चाहता है, कि लोग उसे प्रेम व स्नेह करें। अर्थात, मन की इच्छा की पूर्ति यहां करना चाहता है।	मनोमय कोश में यहां भी वह आत्मा से सूक्ष्म मन का चिंतन करता है,और मानसिक इच्छाओं की पूर्ति का प्रयास करता है।
चतुर्थ	वह प्रेम व अपनेपन के अतिरिक्त सम्मान की भी इच्छा रखता है, और सम्मान की प्राप्ति के लिए वह प्रयासरत रहता है।	यहां पर वह ज्ञान के माध्यम से श्रेयस एवं प्रेयस के मध्य विभेद करता है। और अपने ज्ञान के द्वारा सम्मान की भी प्राप्ति करता है।
पंचम	यह अभिप्रेरणा की चरम अवस्था है। इसकी प्राप्ति के पश्चात उसकी समस्त अभिप्रेरणा तिरोहित हो जाती हैं।	यह आनंद की अवस्था प्राप्त करने के पश्चात मनुष्य के व्यक्तित्व का उच्चतम विकास हो जाता है, उसे और किसी भी प्राप्ति की इच्छा नहीं रह जाती है।

निष्कर्ष :

प्रथम स्तर: प्रथम स्तर पर दोनों विचारधाराएँ भौतिक सुख प्राप्ति की बात करती हैं, और दोनों का मुख्य लक्ष्य भौतिक सुख भोग ही है।

द्वितीय स्तर: इसमें मास्लो महोदय प्राप्त वस्तुओं की सुरक्षा की चिंता करते हैं, तो पंचकोशीय दर्शन में भी व्यक्ति अपने प्राण की सुरक्षा की चिंता करता है।

तृतीय स्तर: इस स्तर पर मास्लो महोदय प्रेम व स्नेह पाना चाहते हैं, तो पंचकोशीय अवधारणा भी मानसिक इच्छा की पूर्ति चाहता है।

चतुर्थ स्तर: यहां पर भी मास्लो महोदय सम्मान प्राप्त करना चाहते हैं, तो पंचकोशीय अवधारणा में भी ज्ञानवान व्यक्ति स्वयं सम्मान का अधिकारी बन जाता है।

पंचम स्तर: इस स्तर पर एक आत्मसिद्धि की बात करता है, दूसरा आनंद की बात करता है, आत्मसिद्धि और आनंद की प्राप्ति के पश्चात कुछ भी प्राप्त करने की इच्छा नहीं रह जाती है, अर्थात इस स्तर पर भी दोनों समान हैं।

मूल्यांकन:

पंचकोशीय सिद्धांत प्राचीन होने के कारण इसे मौलिक कह सकते हैं, परंतु आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत बहुत हद तक पंचकोशीय अवधारणा के सिद्धांत पर आश्रित लगता है। या यूं कहें कि उसी का परिमार्जित रूप है। परंतु दोनों का आधार अलग-अलग है। आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत का आधार अभिप्रेरणा है, जबकि पंचकोशीय अवधारणा का आधार व्यक्तित्व विकास है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ओड, एल.के.- शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
2. पाण्डेय, के. पी.- शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय आधार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।
3. पाण्डेय, कल्पलता - शिक्षा मनोविज्ञान, मैक्ग्रा हिल एंड कंपनी|
4. मास्लो का आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत – विकिपीडिया|
5. मास्लो, ए०एच० - मानव प्रेरणा का सिद्धांत, साइकोलॉजिकल रिव्यू, http://doi.org/10.1037/h0054356
6. सी. एम् .प्रशांत - तेलंगाना जर्नल ऑफ साइकियाट्री 01/01/2018०
7. Pierre Pichere & Anne Christine Cadiat; *"Maslow Hierarchy Needs"*, Lemaitri, Namur, Belgium, I.S.B.N.-9782806269348, YEAR 2024